

Flinders Petrie

Dr. Dilip Kumar

Assistant Professor (Guest)

Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,

Patna University, Patna

Paper – CC-VIII, Sem. – II

सर फ्लिन्डर्स पेट्री (Flinders Petrie) को प्रमुखतः मिस्त्र एवं पैलेस्टाइन में किये गये उत्खननों से ख्याति मिली, परन्तु इन्होंने अपने पुरातात्विक कार्यों का समारंग दक्षिणी ब्रिटेन में किया था। 1880 ई. में इनकी स्टोनहंज पर पुस्तक प्रकाशित हुई। अगले वर्ष से इनका ध्यान मिस्त्र पर चला गया। मनुष्य की सामान्य आयु की अपेक्षा काफी लम्बी अवधि तक विशिष्ट क्षेत्र में कार्यरत रहे और इस बीच पुरातत्व के कई विधियों को उन्होंने विकसित किया। इनका यह दृढ विश्वास था कि पुरातत्व एक कष्ट - साध्य एवं श्रम - साध्य विद्या है। अपनी आत्मकथा में इन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि पृथ्वी की एक इंच को सफलतापूर्वक खोदना चाहिए जिससे इसके अन्दर का कोई अवशेष अनदेखा न रह जाये। ये जन्मजात पुरातत्वज्ञ थे। इनके विषय में कहा जाता है कि जब इनकी वय (आयु) मात्र 8 वर्ष की थी तभी से इनको पुरातत्व में रुचि हो गयी।

1904 में प्रकाशित पेट्री की पुस्तक 'पुरातत्व की विधियाँ एवं उसके उद्देश्य (Methods and Aims in Archaeology)' इस विषय का एक उत्कृष्ट ग्रन्थ है। पेट्री के विषय में क्रॉफोर्ड महोदय ने अपना मत इन शब्दों में व्यक्त किया है - "पुरातत्व का उद्देश्य इतिहास का दिग्दर्शन मात्र न होकर इसका निर्माण है और इसे पेट्री ने कर

दिखलाया । प्राचीन वस्तुओं का लेखा - जोखा रखने की विधि, प्रकार विज्ञान और विवरण तैयार करके प्लानों यथा रेखांकन सहित उनके प्रकाशन की परिपाटियों का समावेश करके तत्कालीन उत्खनन की विधि में इन्होंने क्रांति ला दी । उत्खनन की जिन विधियों एवं तकनीक का इन्होंने उपयोग किया, वे इनके द्वारा परिष्कृत थे ।”

पेट्री महोदय इस तथ्य को भली - भांति समझते थे कि उत्खनन में विध्वंस एवं निर्माण की प्रक्रियाएँ साथ - साथ चलती है । अतः उन्होंने यह मत व्यक्त किया उत्खनन के पश्चात् किसी स्थल के प्राचीन अवशेषों के प्रमाणों का अस्तित्व कागज में ही रह जाता है । अन्य पुरातत्वज्ञों के समान वे भी यह मानते थे कि उत्खनन के समय उपलब्ध सभी वस्तुओं का विवरण तैयार करना चाहिए जिससे भविष्य में काम करने वाले पुरातत्वज्ञ लाभान्वित हो सके । विवरण ऐसा होना चाहिए जिसके आधार पर उत्खनन किये गए स्थल के अतीत की कल्पना को आँखों से देखा जा सके ।

पेट्री ने पुरातत्व की शिक्षा नहीं पायी थी अतः इन्होंने इस विषय की तकनीकियों का स्वयं विकास किया था । इसकी विधियाँ चार सिद्धान्तों पर आधारित थी -

- (i) जिस पुरावशेष का उत्खनन हो रहा है उसके विषय में पूरी सावधानी रखना और भावी उत्खननको के प्रति आदर ।
- (ii) उत्खनन में पूर्ण सतर्कता एवं उपलब्ध प्रत्येक वस्तु का संग्रह और वर्णन ।
- (iii) प्रत्येक पुरावशेष एवं उत्खनन का यथावत प्लान बनाना ।
- (iv) उत्खनन के विवरण का यथासंभव शीघ्र प्रकाशन ।

इन सिद्धान्तों के आधार पर 1889 ई. के लगभग पेट्री ने काम करना आरम्भ कर दिया था । इस प्रकार के वैज्ञानिक विधियों से अब तक मिस्त्र में काम नहीं हुए थे

अतः उस देश के लिए यह गर्व की बात थी। पेट्री ने मरिएटी की आलोचना करते हुए कहा - "इस व्यक्ति ने सैनिकों की एक बड़ी टुकड़ी के सहयोग से ग्रेनाइट निर्मित मंदिर के गिरे हुए भाग को अत्यंत धृष्टतापूर्वक टुकड़े कर डाला।"

पुरातत्व को पेट्री की प्रमुख देन मुख्यतया तीन मानी गयी है -

- (1) मिस्त्र एवं यूनान के प्राचीन अवशेषों का सम - सामयिकीकरण द्वारा तिथि निर्धारण।
- (2) प्रागैतिहासिक एवं आद्यऐतिहासिक मानव समुदायों द्वारा प्रयुक्त वस्तुओं का वैज्ञानिक अध्ययन। पेट्री का कहना था कि पुरातत्व को अनिवार्यतः मानव प्रयुक्त उपकरणों का सर्वांगीण अध्ययन करना चाहिये - जैसे उसका द्रव्य, रंग, संरचना तथा यांत्रिक पक्ष आदि। इन्होंने ही पुरातत्व में पुरावशेष विश्लेषण (Artifact Analysis) विधि के आधार का निर्माण किया और हम इस विधि के माध्यम से बीसवीं शताब्दी में पुरातत्व के रोचक कल उपलब्ध किये।
- (3) सापेक्ष तिथि निर्धारण का विकास इसी विधि द्वारा मिस्त्र की प्रागैतिहासिक मृतपात्रों का प्रकार विज्ञान के आधार पर अनुक्रम निर्धारित किया गया। इस विधि से उन वस्तुओं का भी तिथि निर्धारण करना संभव हो गया जो किसी भी निश्चित तिथि की वस्तु से सम्बद्ध नहीं पाए गए थे।

यद्यपि पेट्री महोदय ने पुरातत्व की अनुपम सेवा की, परन्तु वे भी आलोचनाओं से मुक्त नहीं रह पाए। वहीलर महोदय ने उनकी इस लिए आलोचना की है कि उनके प्रकाशित उत्खनन विवरणों में प्रमाणिक section नहीं मिलते और दूसरी बात की वें

मजदूरों के व्यस्त रहने पर विशेष जोड़ देते थे , परन्तु इतनी आलोचना के पश्चात् उन्होंने यह स्वीकार किया की पेट्री की देन वस्तुतः महान है । उनका व्यक्तित्व बड़ा ही अनुप्रेरक था जिससे उनके प्रति शिष्यों के हृदय में सच्ची श्रद्धा उत्पन्न हो जाती थी । उनका क्रियाशील मस्तिष्क आजीवन अनेकानेक पुरातात्विक समस्याओं एवं संभावनाओं में उलझा रहा ।